20. १००८ श्री मुनिसुव्रतनाथ जी

यक्ष
भृकुटि

चिन्ह
कछुआ

वर्ण
श्यामवर्ण

यक्षिणीं
अपराजिता

अर्घ

जल गन्ध आदि मिलाय आठों, दरब अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भक्ति जुत, जातें जगत सागर तरों।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रत, नाथ मुनि गुणमाल हैं।
तसु चरन आनन्द भरन तारन, तरन विरद विशाल है।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण कृष्णा-२

गर्भकल्याणक

वैशाख कृष्णा-१०

जन्मकल्याणक

वैशाख कृष्णा-१०

तपकल्याणक

वैशाख कृष्णा-९

केवलज्ञान कल्याणक

पिता: श्री सुमित्रा राजा
माता: पदमा

मोक्ष स्थान श्री सम्मेदशिखर जी

फाल्गुन कृष्ण-१२

मोक्षकल्याणक